

बदकिस्मत डैनियल की कहानी

यूक्रेनी लोककथा

एक समय की बात है, दान नाम का एक युवक था। वह जहाँ भी जाता, जो भी करता, और जिसकी भी सेवा करता, उसे कुछ भी हासिल नहीं होता था: उसकी सारी मेहनत व्यर्थ जाती थी, उसे कोई लाभ नहीं मिलता था। एक दिन उसने एक नए मालिक के यहाँ काम करना शुरू किया। उसने कहा, “मैं एक साल तक आपकी सेवा करूँगा, बदले में मुझे गेहूँ की एक छोटी सी ज़मीन मिलेगी।” उसके मालिक मान गए और उसने उनकी सेवा में काम करना शुरू कर दिया। साथ ही, उसने अपनी ज़मीन पर गेहूँ बोना शुरू कर दिया। उसकी गेहूँ की फसल तेज़ी से बढ़ी। जब उसके मालिक की गेहूँ में बालियाँ आ रही थीं, तब उसकी फसल में बालियाँ आ चुकी थीं, और जब उसके मालिक की गेहूँ में बालियाँ आ रही थीं, तब उसकी अपनी फसल पक चुकी थी। उसने सोचा, “मैं इसे कल काट लूँगा।” उसी रात एक बादल उठा, ओले बरसे और उसकी सारी गेहूँ नष्ट हो गई। दानियल रोने लगा। उसने कहा, “मैं किसी दूसरे मालिक के यहाँ काम करने

जाऊँगा, शायद तब ईश्वर मुझे सफलता दे!” इस प्रकार वह दूसरे मालिक के यहाँ चला गया। “मैं पूरे एक साल तक आपकी सेवा करूँगा,” उसने कहा, “यदि आप मुझे वह जंगली बछड़ा दे दें।” तो वह रुक गया और उसकी सेवा करने लगा, और साल के अंत तक उसने उस जंगली बछड़े को इतना प्रशिक्षित कर दिया कि उसे गाड़ी खींचने का घोड़ा बना दिया। “वाह! इस बार तो मैं कुछ लेकर जाऊँगा!” उसी रात भेड़ियों ने अस्तबल पर हमला किया और घोड़े के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। दानियल रोने लगा। “मैं दूसरे मालिक के पास जाऊँगा,” उसने कहा, “शायद वहाँ मुझे ज़्यादा सौभाग्य मिले।” तो वह तीसरे मालिक के पास गया, और उस मालिक की कब्र पर एक बड़ा पत्थर पड़ा था। वह कहाँ से आया, यह कोई नहीं जानता था, और वह इतना भारी था कि सदियों तक कोशिश करने पर भी कोई उसे हिला नहीं सका। “मैं उस पत्थर के बदले एक साल तक आपकी सेवा करूँगा,” उसने कहा। मालिक मान गया, और उसने उसकी सेवा में काम करना शुरू कर दिया। फिर उस पत्थर में एक बदलाव आया, और उस पर तरह-तरह के फूल उगने लगे। एक तरफ वे लाल थे, दूसरी तरफ चाँदी जैसे, और तीसरी तरफ सुनहरे। “वाह!” दानियल ने सोचा, “कम से कम वो पत्थर तो जल्द ही मेरा होगा। उसे कोई हिला नहीं सकता।” लेकिन अगली सुबह बिजली गिरी और

पत्थर पर गिरी, जिससे वो चूर-चूर हो गया। तब डैनियल रोने लगा और विलाप करने लगा कि इतने वर्षों तक सेवा करने के बावजूद भगवान ने उसे कुछ नहीं दिया। लेकिन लोगों ने उससे कहा, “सुनो! हे अभागे! तुम ज़ार के पास क्यों नहीं जाते? वो हम सबके पिता हैं, इसलिए तुम्हारी देखभाल ज़रूर करेंगे!” तो उसने उनकी बात मान ली और चला गया, और ज़ार ने उसे अपने दरबार में जगह दे दी। एक दिन ज़ार ने उससे कहा, “मुझे आश्चर्य है कि तुम इतने अभागे हो, क्योंकि तुम जो चाहो करो, तुम्हें कोई लाभ नहीं होता। मैं तुम्हारे सभी परिश्रम का फल देना चाहता हूँ।” फिर उसने तीन घड़े लिए और उन्हें भरा, पहले में सोना, दूसरे में कोयला और तीसरे में रेत भरकर दानियेल से कहा, “देखो! यदि तू सोने से भरे घड़े को चुनेगा, तो तू ज़ार बनेगा; यदि तू कोयले से भरे घड़े को चुनेगा, तो तू लोहार बनेगा; परन्तु यदि तू रेत से भरे घड़े को चुनेगा, तो तू सचमुच बेहद बदनसीब होगा, और तुझे मेरे राज्य से तुरंत बाहर जाना होगा।” फिर भी मैं तुझे अपने साथ ले जाने के लिए एक घोड़ा और कवच दूंगा।” दानियेल को उस स्थान पर लाया गया जहाँ तीन संदूक रखे थे, और उसने उनके चारों ओर घूमकर एक-एक करके उन्हें छुआ। “यह तो सोने से भरा है!” उसने कहा। उन्होंने उसे तोड़ा तो वह रेत से भरा हुआ था। “अच्छा,” ज़ार ने कहा,

“मैं देखता हूँ कि तू बेहद बदनसीब है। मेरे राज्य से चला जा, क्योंकि मुझे तेरे जैसे किसी की आवश्यकता नहीं है।” फिर उसने उसे एक घोड़ा और कवच दिया, और एक कोसैक का पूरा साजो-सामान दिया, और उसे विदा कर दिया।

वह पूरे एक दिन चलता रहा, दूसरे दिन भी चलता रहा, लेकिन उसके घोड़े और खुद के लिए खाने को कुछ नहीं था। वह तीसरे दिन भी चलता रहा, और दूर उसे भूसे का ढेर दिखाई दिया।

उसने सोचा, “कम से कम मेरे घोड़े के लिए तो ठीक है, भले ही इससे मुझे कोई फायदा न हो।” तो वह उसके पास गया, और तुरंत ही वह आग की लपटों में घिर गया। दानियल रोने लगा, तभी उसने एक दयनीय आवाज़ सुनी, “मुझे बचाओ, मुझे बचाओ! मैं जल रहा हूँ!” — उसने कहा, “मैं तुम्हें कैसे बचा सकता हूँ, जब मैं खुद तुम्हारे पास नहीं आ सकता?” —

आवाज़ ने कहा, “ओह! मुझे अपना हथियार दो, मैं उसे पकड़ लूँगा, और फिर तुम मुझे बाहर निकाल सकते हो।” तो उसने अपना हथियार बढ़ाया, और एक सुंदर साँप निकाला, जैसा कि केवल पुराने लोकगीतों में ही वर्णित है। और उसने उससे कहा, “चूंकि तुमने मुझे यहाँ से निकाला है, तो तुम्हें ही मुझे घर भी ले जाना चाहिए।” — “मैं तुम्हें कैसे ले जाऊँगा?” उसने पूछा। —

“मुझे अपने घोड़े पर बिठा लो, और जिस भी दिशा में मैं अपना

और उसका सिर घुमाऊँ, उसी दिशा में चले जाओ।” – तो उसने उसे अपने घोड़े पर बिठा लिया, और वे चलते रहे, चलते-चलते एक ऐसे भव्य आँगन में पहुँचे जिसे देखकर आनंद ही आ रहा था। फिर वह उसके घोड़े से नीचे उतरी और बोली, “यहाँ रुको, मैं जल्द ही तुम्हारे पास वापस आऊँगी,” और इतना कहकर वह फाटक के नीचे से सरक गई। वह वहाँ खड़ा रहा, खड़ा रहा, इंतज़ार करता रहा, यहाँ तक कि थकान से उसकी आँखों से आँसू बहने लगे; लेकिन, अंत में, वह एक सुंदर युवती के रूप में भव्य वस्त्रों में फिर से बाहर आई, और उसके लिए फाटक खोल दिया। “अपने घोड़े को अंदर ले आओ,” उसने कहा, “और खाओ और थोड़ी देर आराम करो।” तो वे आँगन में गए, और उसके बीचोंबीच दो झरने थे। उस महिला ने एक झरने से एक छोटा गिलास पानी निकाला और उसके बगल में मुट्ठी भर जई बिखेरते हुए कहा, “अपने घोड़े को यहीं बाँध दो!” – “क्या!” उसने सोचा, “तीन दिनों से हमें कुछ खाने-पीने को नहीं मिला, और अब वह मुट्ठी भर जई से हमारा मज़ाक उड़ा रही है!” – फिर वे दोनों मेहमान कक्ष में गए, और वहाँ उसने उसे एक छोटा गिलास पानी और गेहूँ की रोटी का एक छोटा टुकड़ा दिया। – “अरे, मुझ जैसे भूखे आदमी के लिए यह क्या है?” उसने सोचा। लेकिन जब उसने खिड़की से बाहर देखा, तो पाया कि पूरा

आँगन जई और पानी से भरा हुआ था, और उसका घोड़ा पहले ही पेट भर चुका था। फिर उसने गेहूँ की रोटी का छोटा टुकड़ा खाया और पानी पिया, और उसकी भूख तुरंत शांत हो गई।

“अच्छा,” महिला ने कहा, “क्या तुम्हारा पेट भर गया है?” – “हाँ,” उसने उत्तर दिया। – “तो लेट जाओ और थोड़ी देर आराम करो,” उसने कहा। और अगली सुबह जब वह उठा, तो उसने उससे कहा, “मुझे अपना घोड़ा, अपना कवच और अपने वस्त्र दे दो, और मैं तुम्हें बदले में अपने दे दूंगी।” फिर उसने उसे अपना कमीज़ और अपना हथियार दिया और कहा, “यह तलवार ऐसी है कि अगर तुम इसे लहराओगे तो सभी लोग तुम्हारे सामने गिर पड़ेंगे; और इस कमीज़ को एक बार पहन लेने के बाद कोई भी तुम्हें पकड़ नहीं पाएगा। अब तुम अपने रास्ते पर चलते रहो जब तक कि तुम किसी सराय में न पहुँच जाओ, वहाँ वे तुम्हें बताएंगे कि उस देश का ज़ार योद्धाओं की तलाश में है। जाओ और खुद को उसके सामने पेश करो।” और तू उसकी पुत्री से विवाह करेगा, परन्तु सात वर्ष तक उसे सत्य मत बताना!” फिर उन्होंने एक-दूसरे से विदा ली और वह चला गया। वह सराय में पहुँचा, और वहाँ उससे पूछा गया कि वह कहाँ से आया है। जब उन्हें पता चला कि वह एक परदेस से आया है, तो उन्होंने उससे कहा, “एक परदेस ने हमारे ज़ार पर आक्रमण किया है, और वह

अपना बचाव नहीं कर सकता, क्योंकि एक शक्तिशाली योद्धा ने उसके राज्य पर विजय प्राप्त कर उसकी पुत्री को अगवा कर लिया है, और उसे मृत्यु के कगार पर पहुँचा दिया है।”--“मुझे अपने ज़ार का मार्ग दिखाओ,” दानियल ने कहा। तब उन्होंने उसे मार्ग दिखाया, और वह चल पड़ा। जब वह ज़ार के पास पहुँचा, तो उसने उससे कहा, “मैं तेरे लिए इस परदेस को वश में कर लूँगा। मुझे केवल दो कोसैक सैनिकों की सेना चाहिए, परन्तु वे चुने हुए सैनिक होने चाहिए।” फिर दूत पूरे राज्य में घूमते हुए उन दो कोसैकों तक पहुँचे, और दानियल उनके साथ विशाल मैदानों में चला गया। वहाँ उसने उन्हें लेटने और सोने के लिए कहा, जबकि वह पहरा देता रहा। जब वे सो रहे थे, तभी उस पराये देश की सेना उन पर आ पड़ी और दानियल से कहा कि यदि वह विनाश से बचना चाहता है तो वापस लौट जाए। फिर उन्होंने अपनी तोपों और तोपों से गोले बरसाने शुरू कर दिए, और इतने गोले दागे कि दोनों कोसैकों के शरीर पूरी तरह से गोलों से ढक गए। तब दानियल ने अपनी तलवार लहराई और प्रहार किया, और केवल वही बच पाए जिन पर उसके वार नहीं लगे। इस प्रकार उसने उन सभी को परास्त कर उस पराये देश पर विजय प्राप्त की, और वापस आकर ज़ार की पुत्री से विवाह किया, और वे सुखी जीवन व्यतीत करने लगे।

लेकिन परदेस के सलाहकारों ने ज़ारिवना के कानों में बुरी-बुरी बातें फुसफुसाईं। “यह कौन है जिसे तुमने अपने साथ ले लिया है? यह कौन है और कहाँ से आया है? हमें पता लगाओ कि इसकी शक्ति कहाँ है, ताकि हम इसे नष्ट कर सकें और तुम्हें अपने साथ ले जा सकें।” – तब उसने उससे पूछना शुरू किया, और उसने उससे कहा, “देखो! मेरी सारी शक्ति इन दस्तानों में है।” तब उसने उसके सो जाने का इंतज़ार किया, और उससे दस्ताने उतार लिए, और उन्हें परदेस के लोगों को दे दिया। अगले दिन वह शिकार पर गया, और दुष्ट सलाहकारों ने उसे घेर लिया और अपने तीरों से उस पर वार किया, और दस्तानों से उसे पीटा; लेकिन सब व्यर्थ था। तब उसने अपनी तलवार लहराई, और जिस पर भी उसका वार हुआ वह ज़मीन पर गिर पड़ा, और उसने उन सभी को जेल में डाल दिया। लेकिन उसकी पत्नी ने फिर से उसे प्यार से फुसलाया और कहा, “नहीं, मुझे बताओ, तुम्हारी शक्ति कहाँ है?” – “मेरी शक्ति, प्रिय,” उसने कहा, “मेरे जूतों में है।” फिर उसने सोते हुए उसके जूते उतार दिए और उसके दुश्मनों को दे दिए। जब वह बाहर निकला तो वे उस पर फिर टूट पड़े, लेकिन उसने फिर अपनी तलवार लहराई और जितने लोगों पर उसका वार हुआ वे सब ज़मीन पर गिर पड़े, और उसने उन सबको कैद कर लिया। फिर उसकी पत्नी ने

तीसरी बार उससे विनती की और प्यार से दुलार किया। “नहीं, मुझे बताओ, प्रिय,” उसने कहा, “तुम्हारी शक्ति किसमें है?” तब वह उसकी विनती से तंग आ गया और उससे बोला, “मेरी शक्ति मेरी इस तलवार और मेरी कमीज़ में है, और जब तक यह कमीज़ मेरे पास है, कोई मुझे छू नहीं सकता।” तब उसने उसे प्यार से दुलारा और कहा, “तुम्हें नहाना चाहिए, प्रिय, और अच्छे से धो लो। मेरे पिता हमेशा ऐसा ही करते थे।” तो वह मान गया, और जैसे ही उसने कपड़े उतारे, उसने उसके सारे कपड़े बदल दिए और उसकी तलवार और कमीज़ उसके दुश्मनों को दे दी। फिर वह स्नान करके बाहर आया, और तुरंत ही वे उस पर टूट पड़े, उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए, उसे एक बोरी में डाला, उसके घोड़े पर बिठाया, और घोड़े को जहाँ चाहे वहाँ जाने दिया। घोड़ा चलता रहा, और दूर-दूर तक भटकता रहा, जब तक कि वह उस पुरानी जगह पर नहीं पहुँच गया जहाँ वह नागदेवी के साथ रहा था। और जब उसकी उपकारिणी ने उसे देखा, तो उसने कहा, “अरे, बेचारा डैनियल फिर से किसी मुसीबत में न पड़ गया।” और तुरंत ही उसने उसे बोरी से बाहर निकाला, उसके टुकड़ों को जोड़ा, और उन्हें अच्छी तरह धोया, और एक झरने से उपचार करने वाला जल और दूसरे से जीवनदायी जल लेकर उस पर छिड़का, और वह वहाँ फिर से स्वस्थ और मजबूत खड़ा हो

गया। “अब, क्या मैंने तुम्हें सात साल तक अपनी पत्नी को सच न बताने के लिए नहीं कहा था?” उसने कहा, “और तुमने मेरी बात नहीं मानी।” और वह वहाँ खड़ा रहा, और एक शब्द भी नहीं बोला। “अच्छा, अब थोड़ी देर आराम करो,” उसने आगे कहा, “क्योंकि तुम्हें इसकी ज़रूरत है, और फिर मैं तुम्हें कुछ और दूँगी।” तो अगले दिन उसने उसे एक जंजीर दी और उससे कहा, “सुनो! उसी सराय में जाओ जहाँ तुम पहले गए थे, और अगली सुबह जल्दी, जब तुम नहा रहे हो, तो सराय के मालिक से कहो कि वह इस जंजीर से तुम्हारी पीठ पर पूरी ताकत से पीटे, और इस तरह तुम अपनी पत्नी के पास वापस पहुँच जाओगे।” लेकिन उसे इस बारे में एक शब्द भी मत बताना कि क्या हुआ है।” इसलिए वह उसी सराय में गया और रात वहीं बिताई, और अगले दिन उसने सराय के मालिक को बुलाया और उससे कहा, “देखो! जैसे ही मैं पहली बार अपना सिर पानी में डुबोऊँ, मुझे इस जंजीर से जितनी जोर से हो सके, पीठ पर मारो।” तो सराय के मालिक ने तब तक इंतजार किया जब तक उसने अपना सिर पानी में नहीं डुबो दिया, और फिर उसने उसे जंजीर से पीटा, जिसके बाद वह एक ऐसे सुंदर घोड़े में बदल गया जिसे देखना आनंदमय था। सराय का मालिक बहुत खुश हुआ, बहुत खुश। उसने सोचा, “एक मेहमान को भगाकर दूसरा

पा लिया।” उसने बिना देर किए घोड़े को मेले में ले जाकर बेचने की पेशकश की, और उसे देखने वालों में स्वयं ज़ार भी थे। ज़ार ने कहा, “तुम इसके लिए क्या मांगते हो?” -- “मैं पाँच हज़ार रूबल मांगता हूँ।” फिर ज़ार ने पैसे गिने और घोड़े को ले गया। जब वह अपने दरबार में पहुँचा, तो उसने अपने सुंदर घोड़े के बारे में खूब शेखी मारी और अपनी बेटी से कहा, “आओ, मेरी प्यारी बेटी, देखो मैंने कितना बढ़िया घोड़ा खरीदा है।” तब वह उसे देखने आई; लेकिन जैसे ही उसने उसे देखा, वह चिल्लाई, “यह घोड़ा मेरा विनाश करेगा। इसे यहीं मार डालो।” -- “नहीं, मेरी प्यारी बेटी! मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ?” ज़ार ने कहा। -- “तुम्हें इसे मारना ही होगा, और तुम्हें इसे मारना ही होगा!” ज़ार की बेटी चिल्लाई। तो उन्होंने एक चाकू मंगवाया और उसे तेज करने लगे, तभी दरबार की एक दासी को घोड़े पर दया आ गई और वह चिल्लाई, “ओह, मेरे प्यारे घोड़े, तुम इतने सुंदर हो, और फिर भी तुम्हें मारना पड़े!” लेकिन घोड़ा हिनहिनाया और उसके पास गया और बोला, “देखो! मेरे शरीर से जो खून की पहली बूँद बहे, उसे ले लो और बगीचे में दफना दो।” फिर उन्होंने घोड़े को मार डाला, लेकिन उस युवती ने आज्ञा का पालन किया और खून की एक बूँद लेकर उसे बगीचे में गाड़ दिया। खून की उस बूँद से एक चेरी का पेड़ उगा; उसका पहला

पत्ता सुनहरा था, दूसरा पत्ता उससे भी अधिक गहरे रंग का था, तीसरा पत्ता किसी और रंग का था, और उस पर हर पत्ता दूसरे से अलग था। एक दिन ज़ार अपने बगीचे में टहलने निकले और जब उन्होंने उस चेरी के पेड़ को देखा तो वे उस पर मोहित हो गए और अपनी बेटी से उसकी प्रशंसा की। उन्होंने कहा, “देखो! हमारे बगीचे में कितना सुंदर चेरी का पेड़ है! कौन बता सकता है कि यह कहाँ से उगा है?” -- लेकिन जैसे ही ज़ार की बेटी ने उसे देखा, वह चिल्लाई, “यह पेड़ मेरा विनाश करेगा! तुम्हें इसे काटना होगा।” -- उन्होंने कहा, “नहीं! मैं अपने बगीचे के सबसे सुंदर आभूषण को कैसे काट सकता हूँ?” -- “इसे काटना ही होगा, और इसे काटा जाएगा!” त्सारिवना ने उत्तर दिया। फिर उन्होंने कुल्हाड़ी मंगवाई और उसे काटने की तैयारी करने लगे, लेकिन युवती दौड़ती हुई आई और बोली, “ओह, प्यारे छोटे चेरी के पेड़, प्यारे छोटे चेरी के पेड़, तुम कितने सुंदर हो! तुम घोड़े से उछले हो, और अब वे तुम्हें एक दिन भी जीने से पहले ही काट डालेंगे!” -- “कोई बात नहीं,” चेरी के पेड़ ने कहा; “मुझसे जो पहला टुकड़ा गिरे, उसे ले लो और पानी में फेंक दो।” -- फिर उन्होंने चेरी के पेड़ को काट डाला; लेकिन लड़की ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था। और उसने चेरी के पेड़ से पहला टुकड़ा पानी में फेंका, और उसमें से एक इतना

सुंदर बत्तख निकला कि उसे देखना ही आनंद था। फिर ज़ार शिकार पर गया और उसने उसे पानी में तैरते हुए देखा, वह इतना करीब था कि वह उसे अपने हाथ से छू सकता था। ज़ार ने अपने कपड़े उतार दिए और उसके पीछे पानी में कूद गया, लेकिन वह उसे किनारे से और दूर ले गया। फिर बत्तख उस जगह की ओर तैरने लगा जहाँ ज़ार ने अपने कपड़े छोड़े थे, और जब वह वहाँ पहुँचा तो वह एक आदमी में बदल गया और उसने कपड़े पहन लिए, और देखो! वह आदमी दानियल था। फिर उसने ज़ार को पुकारा: “यहाँ तैरकर आओ, यहाँ तैरकर आओ!” ज़ार तैरकर ऊपर आया, लेकिन जब वह किनारे पर पहुँचा तो दानियल ने उसे पकड़ लिया और मार डाला, और उसके बाद वह ज़ार के कपड़े पहनकर दरबार में वापस चला गया। तब सभी दरबारी उसे ज़ार कहकर पुकारने लगे, लेकिन उसने कहा, “वह युवती कहाँ है जो अभी यहाँ थी?” -- वे उसे तुरंत उसके सामने ले आए। “अच्छा,” उसने उससे कहा, “तुम मेरे लिए दूसरी माँ रही हो, और अब तुम मेरी दूसरी पत्नी बनोगी!” इस प्रकार वह उसके साथ रहने लगा और सुखी रहा, परन्तु उसने अपनी पहली पत्नी को जंगली घोड़ों की पूंछों से बंधवाकर अंतहीन मैदानों में टुकड़े-टुकड़े करवा दिया।

समाप्त 🖊️🖊️